साहित्योत्सव
Festival of Letters
24 - 29 फ़रवरी 2020

दैनिक समाचार बुलेटिन

शुक्रवार, 28 फ़रवरी 2020

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य' प्रारंभ

27 फ़रवरी 2020 को साहित्योत्सव के चौथे दिन 'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात कन्नड लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एस.एल. भैरप्पा ने कहा कि प्राचीन भारत में, आश्रमों और शैक्षणिक संस्थानों को वनों के बीच स्थापित किया जाता था तथा आश्रम धाम जो वानप्रस्थ का तीसरा चरण था, इसमें गृहस्थ जीवन से निवृत्त होकर ध्यान किया जाता था तथा जीवन के अर्थ को वन में रहकर जाना जाता था। उन्होंने कहा कि पश्चिमी और भारतीय मान्यताओं के अनुसार मनुष्य और प्रकृति के बीच संकटों में एक बुनियादी अंतर है। भारतीयों के लिए प्रकृति ईश्वर की एक रचना या अभिव्यक्ति है और इसलिए वह पवित्र और पूजा के योग्य है। हमारे जीवन की भलाई से संबंधित प्रकृति की समस्या आज जीवन की प्रमुख समस्या है। औद्योगीकरण और प्रकृति के अप्रतिबंधित उपयोग के कारण हम पृथ्वी को निर्जन बना रहे हैं। ओजोन परत को पहुँचने वाली क्षति के ख़तरों के प्रति वैज्ञानिक हमें सावधान कर रहे हैं। पश्चिम के लोग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए पेड़ों और जंगलों को बनाए रखने की वकालत करते हैं, जबकि भारतीय परंपरा प्रकृति के साथ अपने आध्यात्मिक संबंध को बनाए रखने के लिए यही काम करती है।

प्रसिद्ध लेखक और रॉयल सोसाइटी ऑफ लिटरेचर के फ़ैलो अमित चौधुरी ने अपने बीज भाषण की शुरुआत में, डीएच लॉरेंस की विश्व प्रसिद्ध कविता, 'पीच' उद्धृत की। कविता की पंक्तियों की व्याख्या करते हुए, उन्होंने कहा कि इस कविता में कवि द्वारा मानव जाति के प्रभुत्व का आह्वान किया गया है। यह प्रभुत्व हमेशा उसकी इच्छाशक्ति को पूर्णता में परिणत करता है। प्रकृति स्वयं संपूर्ण नहीं है, यह अधूरी है, और पूर्णता प्राप्त करने की प्रक्रिया में है। इसलिए यह काव्यात्मक भाषा की तरह है जैसा कि मैथ्यू अर्नोल्ड ने इसे 'तरल' और 'अप्रकाशित' कहा है। काव्यभाषा जब रूढ़ हो जाती है तब काव्यात्मकता समाप्त हो जाती है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि एक समान और अद्वितीय भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का दृष्टिकोण ही वह आधार था जिस पर भारत का विचार विन्यस्त था। देश को आज़ादी मिलने से पहले ही भारत की सांस्कृतिक धारणा बन चुकी थी।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने उद्घाटन सत्र में समाहार वक्तव्य देते हुए कहा कि प्राचीन काल से प्रकृति और पर्यावरण हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। हम कभी भी प्रकृति और पर्यावरण पर हावी नहीं होना चाहते थे। हम सदा उनमें सामंजस्य करने का यत्न करते रहे हैं।

संगोष्ठी के प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और साहित्यप्रेमियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह एक प्रचलित तथ्य है कि प्रकृति साहित्यिक प्रस्तुतियों को प्रेरित और प्रभावित करती है। हाल के दिनों में साहित्यिक प्रस्तुतियों और उसके विश्लेषण में पर्यावरण और प्रकृति को कैसे चित्रित किया जाता है, इस पर और इको-आलोचना पर बहुत सारे काम और कार्यक्रम हुए हैं। उन्होंने आगे कहा कि अकादेमी ने महसूस किया कि पर्यावरण और प्रकृति इस समय बेहद महत्त्वपूर्ण विषय है।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय था - महाकाव्यों, उपाख्यानों एवं मिथकों में प्रकृति। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि, आलोचक और अकादेमी के महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। उन्होंने कहा कि प्रकृति पर किसी

आज के कार्यक्रम

प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी)
साहित्य अकादेमी सभागार,
पूर्वाह्न 10.00 बजे

अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व (परिचर्चा)
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.00 बजे

मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना (परिचर्चा)
रवींद्र भवन परिसर, अपराह्न 2.30 बजे

महमूद फारूक़ी द्वारा दास्तानगोई
रवींद्र भवन परिसर, सायं 6.00 बजे

भी बातचीत से पहले यह बात महत्त्वपूर्ण है कि उसके प्रति हम किस तरह का नज़रिया रखते हैं। यदि हमारी दृष्टि उपयोगितावादी है तो हम उसको शोषक की दृष्टि से देखेंगे और हमारी दृष्टि पारंपरिक है तो हम उसे पूजनीय मानेंगे। उन्होंने बाङ्ला साहित्य में विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, ओड़िआ साहित्य में गोपीनाथ महांति का ज़िक्र करते हुए कहा कि कोई भी सृजनात्मक रचना पाठकों में तब ही स्थान पाती है जब वह प्रकृति के प्रति निर्मल भावनाओं के साथ व्यक्त की जाती है। उन्होंने कालिदास की संस्कृत रचनाओं में हिमालय के सौंदर्य के कुछ रोचक प्रसंगों के सहारे बात करते हुए कहा कि प्रकृति को मनुष्य का दर्जा देना होगा तभी हम उसके साथ न्याय कर पाएँगे। उन्होंने महात्मा गाँधी का ज़िक्र करते हुए कहा कि शायद वे विश्व के अंतिम बड़े व्यक्ति थे जिन्होंने पर्यावरण पर अपनी गहरी संवेदना से भरी चिंता व्यक्त की थी।

सत्र में, रघुल वी. राजन ने अपने आलेख में कहा कि दुनिया भर में कई संस्कृतियों में नागा पंथ का प्रचलन रहा है, चाहे वह ट्युटोनिक पौराणिक कथा हो, इजिप्ट, चीनी या भारतीय। यू.एन. मुखर्जी जैसे विद्वानों ने प्राचीन भारत में प्रचलित नागा पंथ की *ऋग्वेद* की अहिरबुधिन्य की अवधारणा का पता लगाया। केरल में भी एक नागा पंथ था जिसमें स्वर्ण रंग के सर्पों की पूजा उनके घर के निकटवर्ती खेतों में की जाती थी, उन्हें सर्प कावु (सर्पों के पवित्र वन) कहा जाता था; सर्प का मलयाळम् में अर्थ है भुजंग। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आजकल विकास के नाम पर पेड़ों को नष्ट किया जा रहा है। उनकी रक्षा करने वाली स्वदेशी मान्यताएँ शिक्षित युवाओं के लिए बेकार हैं। आधुनिक मनुष्य लालची हो गया है। कमला दास की कृति *सर्प कावु* की मूर्तियाँ अब भूमि के एक छोटे से टुकड़े में सिमट कर रह गई हैं।

अभय मोर्य ने कहा कि एक महाकाव्य किसी भी व्यक्ति या राष्ट्र के सबसे प्राचीन ऐतिहासिक अतीत से प्राप्त महत्त्वाकांक्षी कहानियों को दर्शाता है। शुरुआती तौर पर यह कहानियाँ वाचिक काव्य शैली में कही गईं तथा बाद में वे कुछ विशिष्ट कवियों या लेखकों, यथा-वाल्मीकि द्वारा रामायण, व्यास द्वारा महाभारत तथा होमर द्वारा *ओडिसी* एवं *इलियड* के रूप में लिखी गईं। अधिकांश महाकाव्यों में प्रकृति को अपनी अभिव्यक्ति के तीन रूप मिले : बाहरी, आंतरिक और अभिन्न। विलियम कॉओपर की प्रसिद्ध उक्ति है, "भगवान ने देश बनाया, तथा आदमी ने शहर बनाया।" होमर कृत ओडसी और इलियड में प्रकृति को वाह्य व्यक्तित्व के रूप में अभिव्यक्त देखा जा सकता है, अर्थात् प्रकृति को परिदृश्य के रूप में देखा जाता है, जिससे व्यक्ति के परिवेश में और अधिक सुंदरता बढ़ती है।

विश्वनाथ शिंदे ने अपने आलेख में कहा कि लोकगाथाएँ लोकचेतना का सजीव गेय प्रतिबिंब है। लोकगाथाएँ सांस्कृतिक अस्मिता की अमूल्य निधि है। मिथ शब्द का अर्थ धर्मगाथा भी किया जाता है।

एम.ए. आलवार ने अपने आलेख में बताया कि पर्यावरण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन आदि आज की समस्याओं को हल करने में वैदिक ग्रंथ किस प्रकार से योगदान दे सकते हैं। इस आलेख में वेदों और पारंपरिक साहित्य की प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के लिए एक उपकरण के रूप में इसके रणनीतिक विस्तार के अंतर्निहित पारंपरिक व्यवहारों के बारे में कुछ विश्वासों और प्रथाओं के बारे में बताया गया है।

भोजनोपरांत द्वितीय सत्र आयोजित हुआ, जिसका विषय था : उत्तर-पूर्व के साहित्य में प्रकृति विमर्श : पूर्व और वर्तमान स्थिति। इस सत्र की अध्यक्षता दामोदर मावज़ो ने की तथा इस सत्र में ममंग दई, डेज़्मंड खार्मावफ्लाङ् और प्रीति रेखा दत्त ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

ममंग दई ने अपने आलेख में कहा कि विभिन्न समुदायों के साहित्य का एक बड़ा हिस्सा मौखिक परंपरा के माध्यम से हमारे पास आता है। बदले में इसने एक ग़ैर-लिपि मातृभाषा से अनुवादित समकालीन लेखों के एक साहित्यिक परिदृश्य को बढ़ावा दिया है जो रोमन लिपि का उपयोग कर रहा है या अंग्रेज़ी भाषा में लिखा गया है। डेज़्मंड खार्मावफ्लाङ् ने 'खासी एकात्मकता के साथ लोकगीत और कथा : एक अध्ययन' विषयक अपने आलेख में इस बात पर बल दिया कि लोक साहित्य में विचारों और मुद्दों की साहित्यिक अवधारणाओं की जाँच के लिए एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की अधिक आवश्यकता है।

प्रीति रेखा दत्त ने 'बिहू गीत में प्रकृति पर चिंतन : एक अध्ययन' पर अपने शोध पत्र में विश्लेषण किया कि बिहू मूल प्राकृतिक जीवन की आत्मा और सोच है, इसमें जीवनचक्र की भावनाओं का विवरण मिलता है।

तृतीय सत्र का विषय था : भारतीय लोकसाहित्य में प्रकृति। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात समालोचक और अकादेमी के महत्तर सदस्य गोपीचंद नारंग ने की तथा महेंद्र कुमार मिश्र और महेश शर्मा ने अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. नारंग ने कहा कि प्रादेशिकता किसी भी मुल्क की एकजुटता के विपरीत है लेकिन इससे ही अवचेतन और चेतन बनता है वर्ना शेक्सपियर भारत में और ग़ालिब अरब में क्यों पैदा नहीं हो सकते। प्रादेशिकता में पहाड़, नदियाँ, वादियाँ, खेतियाँ, धरती सब आ जाते हैं। उनकी खुशबू साहित्य में समोई हुई है। संगोष्ठी के सत्रों का संचालन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने किया।

आमने-सामने

बिना जड़ों की तरफ लौटे कोई भी परंपरा जीवित नहीं रह सकती

आमने-सामने कार्यक्रम के अंतर्गत बाङ्ला के पुरस्कृत लेखक चिन्मय गुहा से सुबोध सरकार ने बातचीत की। चिन्मय गुहा ने कहा कि उन्होंने 21 वर्ष रवींद्रनाथ टैगोर और रोमां रोलां के पत्र-व्यवहार का अध्ययन किया और यह जानने की कोशिश की कि कैसे एक समय के दो बड़े साहित्यकार बिना सरहद की दुनिया बनाने का स्वप्न देख रहे थे। उन्होंने कहा कि मैंने अनुवाद के ज़रिये एक नए भाषायी सौंदर्य को बनाने और उसको आत्मसात करने की प्रक्रिया को महसूस किया है। बिना जड़ों की तरफ लौटे कोई भी परंपरा जीवित नहीं रह सकती। विभिन्न सृजनात्मक विधाओं के बीच मुझे अनुवाद कार्य ज़्यादा चुनौतीपूर्ण और बेहतर लगा। जड़ों की तलाश आज भी जारी है।

पुरस्कृत गुजराती लेखक रतिलाल बोरीसागर से हर्षद त्रिवेदी ने बातचीत की। रतिलाल बोरीसागर ने अपने लेखन की प्रेरणा अपने से ही पाने की बात कहते हुए बताया कि वे भगवान द्वारा बनाए गए मैन्यूफैक्चरिंग डिफ़ेक्ट हैं। उन्होंने अपने युवा अवस्था के संघर्षों का ज़िक्र करते हुए कई मज़ेदार बातें बताईं और कहा कि साहित्यकार को बाहर की दुनिया में ही सम्मान मिलता है। घरवाले उन्हें एक लेखक के रूप में न देखकर एक पिता, पति की ज़िम्मेदार भूमिका में देखते हैं।

हिंदी में पुरस्कृत नंदकिशोर आचार्य से भानु भारती ने बातचीत की। एक प्रश्न के जवाब में नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि वे बचपन से ही अपने को समझने की कोशिश में लगे रहते थे। आगे चलकर यही चाहत मनुष्य के आत्म को पहचानने की कोशिश बन गई। उन्होंने विभिन्न विधाओं में लेखन की सफलता और असफलता पर बात करते हुए कहा कि शब्द के अंदर एक छिपी हुई अनुभूति होती है और कोई भी रचना उसी के कारण मज़बूत या हल्की होती है। उन्होंने कहा कि कोई भाषा तभी तब बची रहेगी जब तक वह अपने बहाव को बनाए रखेगी। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता मेरा सबसे बड़ा आग्रह है।

मलयाळम् भाषा के लिए पुरस्कृत मधुसूदनन् नायर से आर. नंदकुमार ने बातचीत की। मधुसूदनन् नायर ने कहा कि अगर वे किसी एक बच्चे को रोने से चुप नहीं करा सकते तो उन्हें कवि कहलाने का अधिकार नहीं है। उन्होंने केरल में कविता की ऑडियो-परंपरा की बात करते हुए बताया कि यह फार्म अभी वहाँ बहुत लोकप्रिय है। उन्होंने कहा कि हम किसी भाषा को संगीत से अलग नहीं कर सकते।

अंत में उर्दू के लिए पुरस्कृत शाफ़े क़िदवई ने सरवर-उल-हुदा से बातचीत में कहा कि उनकी पुरस्कृत कृति में सर सय्यद के जीवन के विभिन्न पहलुओं को जानने-समझने की कोशिश है। उन्होंने सर सय्यद की व्यापक और दूरगामी दृष्टि के बारे में कहा कि वे इस्लाम की प्रगति को एक नए परिवेश में देखना चाहते थे।

अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन संपन्न

साहित्योत्सव में अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन का आयोजन अपराह्न 2.00 बजे किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण में कहा कि अकादेमी भारत के सभी कवियों का सम्मान करती है। मुख्य अतिथि एवं प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि होशांग मर्चेंट ने अपनी तीन कविताओं का पाठ किया। उन्होंने ट्रांसजेंडर लोगों के साथ होनेवाली विभिन्न ज़्यादतियों का ज़िक्र किया।

अपने बीज भाषण में प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि आर. राज राव ने कहा कि आज से 17 महीने पहले स्थितियाँ दूसरी थीं और यह कल्पना करना भी मुश्किल था कि हमारे प्रतिनिधि इस तरह किसी सार्वजनिक मंच पर अपनी अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत कर सकेंगे। उन्होंने इसके लिए स्वयं एवं साथियों द्वारा लंबी क़ानूनी लड़ाई का ज़िक्र करते हुए बताया कि आज भी हम क़ानूनन कुछ अधिकार पा चुके हैं लेकिन अभी हमारी लड़ाई सामाजिक पहचान बनाने की है। उन्होंने कई विदेशी क़ानूनों की जानकारी देते हुए कहा कि हमारी लड़ाई अभी भी जारी है।

अपना अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि एलजीबीक्यू लोगों के साथ किए जाने वाला अमानवीय व्यवहार उन्हें व्यथित करता है। हमारे समाज द्वारा उन्हें पूरी तरह स्वीकार करना होगा, तभी हम एक संतुलित समाज की कल्पना कर पाएँगे।

अगले सत्र में विक्रमादित्य सहाय (अंग्रेज़ी कवि) की अध्यक्षता में एलजीबीटीक्यूआई पहचानवाले कवियों द्वारा कविताएँ प्रस्तुत की गईं। पठित कविताओं का मूल स्वर उनके प्रति उपेक्षा से भरे सामाजिक व्यवहार के साथ-साथ सहज मानवीय अनुभूतियाँ और समय समाज था। रवीना बरिहा ने अपनी कविता में कहा कि - "दुख के पाठ पढ़कर और निर्मल हुई मैं/ पाकर तिरस्कार तुम्हारा अनजाने में सबल हुई मैं"। इस कवि सम्मेलन में अदिति आंगिरस (अंग्रेज़ी), चाँदिनी (कन्नड), गिरीश (तमिळ), शांता खुराई (मणिपुरी), रेशमा प्रसाद (हिंदी), अब्दुल रहीम (उर्दू), आकाश (राय) दत्त चौधुरी (अंग्रेज़ी), तोशी पांडेय (हिंदी), विशाल पिंजाणी (सिंधी एवं अंग्रेज़ी), अलगू जगन (तमिळ) और डेनियल मेंडोंका (हिंदी एवं उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कविताएँ मूल भाषा के साथ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद में पढ़ी गई। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद कुमार देवेश द्वारा किया गया।

ताल वाद्य कचेरी की मोहक प्रस्तुति

साहित्योत्सव के दौरान संध्या समय ताल वाद्य कचेरी की प्रस्तुति हुई। ताल वाद्य कचेरी भारतीय आघात-वाद्ययंत्रों का एक संयोजन है, जिसमें मृदमंग मुख्य वाद्य है तथा तबला, घाटम, खंजीरा और मॉर्सिंग अन्य संगत करने वाले वाद्यवृंद हैं। आघात-वाद्यवृंद हमारे जीवन के अभिन्न अंग रहे हैं। प्रत्येक वाद्य के तालबद्ध चक्र अलग-अलग एक साथ आवर्तन करते हैं और सामूहिक रूप से एक रंगारंग संगीतमय सतत् परिवर्तनीय पैटर्न बनाते हैं। भारतीय आघात-वाद्य कला अद्धितीय और जटिल है। ताल वाद्य कचेरी-भारतीय वाद्ययंत्रों की विविधता में एकता का प्रतिबिंब है। पेरावली जय भास्कर के साथ इस प्रस्तुति में तबले पर राशिद ज़फ़र, घाटम और मॉर्सिंग पर एल. प्रसाद, खंजीरा पर विग्नेश जयरामन और वायलिन पर पी. नंदकुमार ने संगति की।

साहित्योत्सव 2020 के कार्यक्रम

दिनांक	समय	कार्यक्रम	स्थान
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) (जारी)	साहित्य अकादेमी समागार
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	भारत में प्रकाशन की स्थिति (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	नई फ़सल (अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन)	रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in